P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिंदू धर्म : समग्र स्वीकार का धर्म

भानु प्रकाश शर्मा
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
उनियारा, टोंक, राजस्थान

सारांश

वर्तमान में हिंदू धर्म के संबंध में विभिन्न भ्रांतियां प्रचलन में दृष्टिगत हो रही है ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे कट्टरता हिंदू धर्म को चारों ओर से घेरती नजर आ रही है प्रासंगिक लेख में हिंदू धर्म के बुनियादी स्वरूप की व्याख्या करते हुए यह तथ्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि वास्तविक हिंदू धर्म कभी भी कट्टर नहीं हो सकता दुनिया का प्रत्येक धर्म किसी एक विशिष्ट पथ का अनुगमन करता है उदाहरण स्वरुप इस्लाम धर्म का संपूर्ण स्वरूप कुरआन ग्रंथ पर आधारित है और ईसाई धर्म बाइबिल ग्रंथ पर इसी प्रकार समस्त धर्म किसी एक मूल ग्रंथ के द्वारा पूर्णतया व्याख्यायित हो जाते हैं,परंतु हिंदू धर्म के साथ ऐसा नहीं है यह धर्म किसी एक पथ का अनुगमन नहीं करता। जिस प्रकार केवल वेदों को हिंदू धर्म की बुनियाद माने तो उपनिषद छूट जाएंगे या गीता को आधार बनाएंगे तो नास्तिक पतंजलि छूट जाएंगे या राम को आधार माने तो कृष्ण फिर किस तरह हिंदू धर्म में समाहित होंगे कहने का अर्थ है कि कोई एक विचार या ग्रंथ हिंदू धर्म को संपूर्ण विश्लेषण नहीं कर सकता जैसा कि विश्व के अन्य सभी धर्मों के साथ है वैसा हिंदू धर्म के साथ नहीं है और इसका मूल कारण है कि हिंदू धर्म किसी एक विचार या पंथ से जुड़ा ना होकर समस्त पंथो को अपने भीतर समाहित करता है विभिन्न ऋषियों की वाणी जो कि अलग अलग विचारधारा से संबंधित हैं उन सभी को हिंदू धर्म में स्वीकार किया गया है इसलिए वेद और उपनिषदों में हजारों ऋषियों की विपरीत वाणी को एक साथ स्वीकार किया गया है और यह सब हिंदू ही कहलाते हैं इसीलिए सगुण हो या निर्गुण वेद हो या उपनिषद नास्तिक हो या आस्तिक अघोरी हो या वेदांती राम भक्त हो या कृष्ण भक्त या चार्वाक ऋषि जैसा वेद विरोधी और परम नास्तिक यह सभी हिंदू ही कहलाते हैं अर्थात समग्र स्वीकार का धर्म ही हिंदू धर्म है।

मुख्य शब्द : हिंदू धर्म, भ्रांतियां, कट्टर, विचारधारा।

प्रस्तावना

पृथ्वी पर 300 से भी ज्यादा धर्म अस्तित्व में है जिनमें से कुछ धर्म काफी नए हैं जबकि कुछ धर्म प्राचीनतम है हिंदू धर्म उन्हीं धर्मों में शुमार है जो प्राचीनतम माने जाते हैं वर्तमान में हिंदू धर्म का स्वरूप विवेचन अत्यंत ही प्रासंगिक है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है जैसे धार्मिक कट्टरता हिंदू धर्म को चारों ओर से घेर कर आगे बढ़ रही जो हिंदू धर्म अपने हजारों साल के इतिहास में समग्र स्वीकार करके आगे बढ़ता रहा वहीं हिंदू धर्म मानो धार्मिक कट्टरता की ओर बढ़ रहा है जबकि सचाई यह है कि के प्रत्येक धर्म में कट्टरता होती है या हो सकती है परंतु यह बात सबको चौंका सकती है एक वास्तविक हिंदू कभी भी कट्टर नहीं हो सकता या कि हिंदू धर्म में ही कट्टरता असंभव है। इस तथ्य की सच्चाई जानने के लिए हमें हिंदू धर्म के मूल स्वरुप को जानना होगा कि आखिर एक हिंदू कट्टर क्यों नहीं हो सकता।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का मूल मंतव्य यह है कि यदि समस्त स्वीकार करना ही हिंदू धर्म की बुनियाद है तो भला वह धर्म कट्टर कैसे हो सकता है हिंदू धर्म में कट्टरता का प्रवेश उस समय प्रारंभ होता है जब हम श्रमण परंपरा के महावीर स्वामी को हिंदू धर्म में स्वीकार नहीं करते बड़े मजे की बात यह है कि जैन धर्म के 23 तीर्थंकर श्रमण परंपरा के नाम से हिंदू ही कहलाते हैं परंतु जब 24 तीर्थंकर को तथाकथित कट्टर हिंदू अस्वीकार करते हैं उसी समय जैन धर्म का उदय होता है और इसी प्रकार बौद्ध धर्म भी कट्टर हिंदुओं के कारण अस्तित्व में आता है अन्यथा समग्र स्वीकार करने वाले हिंदू धर्म के अस्तित्व में रहते किसी अन्य पंथ की आवश्यकता ही नहीं रहती ।

वास्तव में प्रस्तुत लेख यही तथ्य स्थापित करने का प्रयास है कि अपने बुनियादी स्वरूप में हिंदू धर्म कभी भी कट्टर नहीं हो सकता या की वास्तविक हिंदू धर्म में कभी भी कट्टरता संभव नहीं है हिंदू धर्म सत्य के विभिन्न मार्गों से मिलकर बना है इसीलिए समग्र विचारधारा का स्वीकार ही हिंदू धर्म है।

हिंदू धर्म : विपरीत विचारधाराओं का समागम

केवल हिंदू धर्म को छोड़कर दुनिया का प्रत्येक धर्म एक विशेष पथ का अनुगमन करता है एक विशिष्ट पथ के इर्द–गिर्द ही कोई भी धर्म स्थापित होता है उदाहरण के तौर पर मुस्लिम धर्म कुरआन ग्रंथ की बुनियाद पर आधारित है या ईसाई धर्म बाइबिल ग्रंथ के सिद्धांतों पर खड़ा हुआ है मुस्लिम धर्म को यदि हमें जानना है तो मुस्लिम धर्म का संपूर्ण स्वरूप कुरान में सामने आ जाता है "इस्लाम एक एकेश्वरवाद ही धर्म है जो इसके अनुयायियों के अनुसार अल्लाह के अंतिम रसूल और नबी मोहम्मद द्वारा मनुष्य तक पहुंचाई गई अंतिम ईश्वरीय पुस्तक कुरान की शिक्षा पर आधारित है"[1] इसी प्रकार ईसाई धर्म को यदि हमें जानना है तो बाइबल पर्याप्त है "बाईबिल अथवा बाइबल ईसाई धर्म (मसीही धर्म) की आधारशिला है" [2]

केवल मुस्लिम या ईसाई धर्म ही नहीं पूरी दुनिया में जितने भी धर्म चलाएं मान हैं सभी धर्म एक विशिष्ट पथ का अनुगमन करते हैं और उन सभी धर्मों के अपने अपने विशिष्ट नियम है जो किसी न किसी धर्म ग्रंथ पर आधारित हैं परंतु अब हम बात करें हिंदू धर्म की तो उक्त धर्मों की तरह हिंदू धर्म किसी विशिष्ट पथ पर चलने का नाम नहीं है वरन हिंदू धर्म का अभिप्राय है समग्र स्वीकार का धर्म।हिंदू धर्म किसी विशिष्ट विचारधारा का नाम नहीं है अर्थात यह धर्म किसी एक पवित्र ग्रंथ के नियमों पर चलने वाला धर्म नहीं है जैसा कि इस्लाम या इसाई धर्म के साथ है बल्कि हिंदू वह धर्म है जो दुनिया की प्रत्येक विचारधारा को स्वीकार करता है सत्य को प्राप्त करने के जितने भी मार्ग है या हो सकते हैं सभी को स्वीकार करने का नाम हिंदू धर्म है "वेद में कुरान भी मिल जाएगा, वेद में बाइबल भी मिल जाएगी, वेद में धम्मपद भी मिल जाएगा, वेद में महावीर का वचन भी मिल जाएगा, वेद इनसाइक्लोपीडिया है"।[3]

हिंदू धर्म के स्वरूप को हम देखें तो यह बात समझी जा सकती हैं जैसे हिंदू धर्म सगुण और निर्गुण दोनों ही विपरीत विचारधारा को एक साथ धारण किए हुए हैं तुलसी सूर मीरा जब अपने भक्ति धारा में ईश्वर को राम और कृष्ण के रूप में याद करते हैं तो कबीर रैदास सुंदर दास यह भी अपने भक्ति मार्ग में ईश्वर को निर्गुण निराकार रूप में भजते हैं और यह दोनों ही धारा के कवि हिंदू ही कहलाते हैं

"सगुनहि अगुनहि नहीं कछु भेदा,
गावही मुनि पुराण बुधबेदा," [4]

जो व्यक्ति परमात्मा के किसी आकार में विश्वास करता है और परमात्मा को किसी विशिष्ट नाम से पुकारता है, उसकी मूर्ति बनाता है या मंदिर में विराजमान करता है ऐसा सगुण वादी भी हिंदू ही कहलाता है परंतु इसके विपरीत कोई व्यक्ति परमात्मा को निराकार ही समझता है, उसे अनाम ही देखता है और किसी स्थल विशेष में परमात्मा को नहीं देखता तो ऐसा निर्गुण वादी भी हिंदू के रूप में ही जाना जाता है

"कबीर नानक दादू हरिदास निरंजनी आदि संतों ने जिस रूप में अपने विचार व्यक्त किए हैं उनका आधार कोई एक विचारधारा या मतवाद नहीं है। अद्वैतवाद वैष्णवों की भक्ति साधना सिद्धों नाथों की सहज सरल साधना आदि का जिस पद्धति इन्होंने समन्वय किया था वह सर्वजन सुलभ थी" [5]

यह तो एक बानगी है वास्तव में हिंदू धर्म विभिन्न समान धर्मों या विपरीत धाराओं को अपने भीतर एक साथ लेकर चलता रहा है यह धर्म भक्ति मार्ग को या ज्ञान मार्ग अथवा कर्म मार्ग को भी समान रूप से स्वीकार करता है सांख्य, न्याय, वैशेषिक जैसी सभी धाराएं हिंदू ही कहलाती रही है अगर पवित्र मंत्रों का ज्ञाता ऋषि हिंदू है जो शुद्ध दिनचर्या के साथ साधना कर्म करता है तो शव मदिरा या मैथुन के साथ घोर अघोरी भी हिंदू ही है जो श्मशान में अपवित्र स्वरूप में साधना कर्म करता है यह धर्म सांख्य या न्याय जैसे सत्य के उदात्त मार्ग को ही स्वीकार नहीं करता वरन चार्वाक दर्शन जैसे घोर विरोधी मार्ग को भी सहजता से स्वीकार करता है जो चार्वाक दर्शन देह से इतर जीवन को स्वीकार ही नहीं करता और यह मानता है कि–

"यावत जीवेत सुखम जीवेत ऋण कृत्वा घृतम पीबेत" [6]

अर्थात जब तक जियो सुख से जियो और घी पीने के लिए ऋण भी लेना पड़े तो लो और यह चार्वाक भी हिंदू ही है जो भक्त नाच गाकर परमात्मा को पाना चाहे वह भी हिंदू ही है और जो बैठकर ध्यान लगाकर उसे पाने का प्रयास करें वह भी हिंदू ही हैं जो तीर्थों मंदिरों नदियों पहाड़ों जानवरों या कहीं भी बाहर परमात्मा को ध्यावे वह भी हिंदू ही है और जो अपने देह में ही उस परम सत्य को तलाशे वह भी हिंदू ही है। साधना मार्ग को व्यवहारिक एवं सरल स्वरूप प्रदान करने में ही संतमत की सार्थकता है निर्गुण मार्ग में कबीर कहते हैं–

''हरि रस पिया जानिए जै कबहु ना जाये खुमार।
मैंमंता घुमत फिरै नाही तन की सार।'' [7]

यह तो कुछ भी नहीं जो परमात्मा में विश्वास करता है, आस्तिक है वह तो हिंदू है ही परंतु जो ईश्वर को नहीं मानता और घोर नास्तिक है वह भी हिंदू ही कहलाता है हिंदू धर्म की परिपक्वता की हद तो यह है कि यह धर्म ईश्वर को ना मानने वाले अनीश्वरवादी विचार को भी बराबर सम्मान देता है सांख्य, योग, मीमांसा वह हिंदू दर्शन है जो सृष्टि में ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं मानते।

''मीमांसा भौतिक जगत को मानती है भौतिक जगत की सत्ता प्रत्यक्ष से प्रमाणित होती है मीमांसा ब्रह्म सत्ता वादी है संसार के अतिरिक्त यह आत्माओं के अस्तित्व को भी मानती है किंतु यह किसी जगत – सृष्टा परमात्मा या ईश्वर को नहीं मानती।" [8]

दुनिया के किसी भी धर्म में यह घटना नहीं घट सकती कि वह नास्तिक को स्वीकार करें जैसे कोई नास्तिक रहते हुए मुसलमान नहीं हो सकता परंतु यह हिंदू धर्म की व्यापक उदारता है कि वह भी हिंदू हो

सकता है जो ईश्वर को नहीं मानता और परम नास्तिक है इस प्रकार सत्य को जानने की अनंत धाराओं का संगम ही हिंदू धर्म है जो व्यक्ति किसी एक धारा को दृढ़ता पूर्वक पकड़ कर बैठ जावे ऐसा कट्टर व्यक्तित्व वास्तविक हिंदू नहीं हो सकता वस्तुतः समग्र स्वीकार का भाव ही हिंदू धर्म का मौलिक स्वभाव है।

हिंदू धर्म में कट्टरता का प्रवेश और हिंदू धर्म का अधोपतन

हजारों साल तक हिंदू धर्म विभिन्न सत्य के मार्गों को स्वीकार करता रहा और जैसे बहुत सी नदियों के संयोग से सागर विकसित होता रहता है वैसे ही संसार में सत्य को जानने की जितनी भी विचारधाराएं थी उन सबको सहर्ष स्वीकार करके हिंदू धर्म भी समृद्ध और पल्लवित होता रहा जो भी ऋषि सत्य को जान लेता उसके वचन हम वेदों में संग्रहित करते रहे इसीलिए वेद भिन्न–भिन्न ऋषियों की वाणी का संग्रह था वेदों और उपनिषदों में सभी ऋषियों की वाणी को हिंदू स्थान देते रहे जिसने भी सत्य को जाना, भले ही सभी ऋषियों की विचार दृष्टि पूरी तरह भिन्न रही समग्र स्वीकार करने का सिलसिला हिंदू धर्म में सदियों तक चलता रहा और चाहे कितना भी विपरीत दृष्टिकोण हो हिंदू धर्म ने प्रत्येक विचार को स्वीकार करने का साहस दिखाया परंतु ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व तक आते–आते दुनिया का सबसे उदार और साहसी धर्म भी कट्टरता का शिकार होने लगा भारत के आध्यात्मिक इतिहास में जब बुद्ध और महावीर का आगमन हुआ तब तक हिंदू धर्म में कट्टरपंथी और धर्म के ठेकेदार ताकतवर होते गए और समग्र स्वीकार करने वाला वाले हिंदू धर्म ने बुद्ध और महावीर जैसे ऋषियों की वाणी को अस्वीकार कर के स्वयं को कट्टरपंथियों के हवाले कर दिया यहीं से वह समय शुरू हुआ जब सर्वस्व स्वीकार करने के अपने बुनियादी स्वरूप को छोड़कर हिंदू धर्म विकास की परंपरा से हट गया और सागर के जैसे व्यवहार को छोड़कर छोटे डबरे की माफिक बनना शुरू हुआ। क्या विडंबना की बात थी कि हजारों साल तक 23 तीर्थंकरों की वाणी श्रमण परंपरा के नाम से हिंदू धर्म में ही समाहित होती रही परंतु 24वें तीर्थंकर महावीर के साथ ही हिंदुओं की श्रमण परंपरा जैन धर्म के रूप में सामने आई यह कट्टरपंथियों का ही प्रभाव रहा कि जैनों के 23 तीर्थंकर पहले श्रमण परंपरा के नाम पर हिंदू धर्म को ही विकसित करते रहे परंतु महावीर को अस्वीकार कर के हिंदू धर्म एक ऋषि की वाणी से चुक कर और ज्यादा विकसित होने से भी चूक गए और हिंदुओं की श्रमण परंपरा को ही जैन धर्म के रूप में नए धर्म की तरह सामने आना पड़ा।

केवल महावीर ही नहीं वरन् कट्टरपंथियों की कृपा से बुदध् जैसे ऋषि का साधना मार्ग भी हिंदू धर्म में स्वीकार नहीं हो सका और हिंदू धर्म आध्यात्म की महान वाणी से पूरी तरह चूक गया। समग्र स्वीकार करने वाला हिंदू धर्म अब कट्टरपंथ का शिकार हो चुका था इसीलिए बुदध् और महावीर की साधना मार्ग को नए धर्म का सहारा लेना पड़ा यह तथ्य ध्यातव्य है कि जब तक हिंदू धर्म समग्र स्वीकार करता रहा तो संसार में दूसरे धर्मों का अस्तित्व ही नहीं रहा परंतु कट्टरपंथियों के प्रभाव से जैसे ही हिंदुओं ने सर्वस्व स्वीकार करने की परंपरा छोड़ी तो जैन और बौद्ध धर्म तो सामने आये ही आगे जाकर ईसाई और इस्लाम धर्म तथा अन्य कई धर्म सामने आते गए जबकि हिंदू धर्म थोड़े से कट्टरपंथियों के कारण सिकुड़ता चला गया।

निष्कर्ष

निसंदेह कट्टरता ने हिंदू धर्म के विकास की राह को रोक दिया है जब समग्र स्वीकार करना ही हिंदू पंथ की बुनियादी विशेषता रही है तो फिर हम कैसे किसी सत्य के पथ की राह रोक सकते हैं जैसे ही हम किसी भी पंथ को अस्वीकार करते हैं तो अंततः हम हिंदू ही नहीं रह जाते जिस हिंदू धर्म ने ने चार्वाक जैसे नास्तिक धर्म को या अघोरी जैसे तथाकथित अपवित्र पंथ को भी सहर्ष स्वीकार किया है तो हम किसी भी परंपरा को कैसे अस्वीकार कर सकते हैं शुदध् नास्तिक पतंजलि को भी हमने सिर आंखों पर बिठाया है जिन्होंने यहां तक कहा की ईश्वर तो सिर्फ एक विधि का नाम है ''ईश्वर प्रणिता बद्ध''। [9]

इसीलिए कट्टरता वस्तुतः हिंदू पंथ के सर्वथा विपरीत है हम वह हिंदू हैं जो अमृत ही नहीं जहर को भी स्वीकार करते हैं जीवन ही नहीं मृत्यु को भी स्वीकार करते हैं राम ही नहीं रावण को भी स्वीकार करते हैं या यूं कहें की एक हिंदू वह है जिसे समग्र स्वीकार है हम बड़े गर्व से कह सकते हैं की दुनिया के कई धर्मों ने मन्सूर ईसा मसीह सुकरात जैसे संबुदध् महापुरुषों का वध किया है परंतु मनुष्यता के ज्ञात इतिहास में हिंदू जाति ने किसी भी संबदध् व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचाया है महत्वपूर्ण तथ्य तो यह भी है कि हिंदू धर्म के साहित्य में भी मानव जाति को एकत्व की भावना से युक्त बताया गया है साहित्य का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए कहा गया है।

"यह मानव के मन में समान मूल्य दृष्टि करके मानव जाति को भाव और प्रयत्न के समान धरातल पर लाता है इससे संसार के कृत्रिम वैविध्य में मूल एकत्र की स्थापना करता है"। [10]

वर्तमान में गाय मंदिर मस्जिद जैसे नाम के आधार पर हिंदू धर्म में कट्टरता का प्रवेश हो रहा है ऐसा लगता है जैसे हिंदू धर्म भी अन्य धर्मों की तरह कुछ विशिष्ट नियमों को चुनना चाहता है परंतु उपयुक्त आलेख में हम यही स्पष्ट करना चाहते हैं की अन्य धर्मों की तरह हिंदू धर्म कुछ विशिष्ट नियमों का नाम नहीं है वरन दुनिया में सत्य को जानने के जितने भी मार्ग है वह सभी हिंदू ही है। आस्तिक, नास्तिक, भक्ति, योग, सांख्य, मीमांसा, आकार, निराकार यानी सत्य को जानने के समस्त मार्ग हिंदू धर्म में स्वीकार्य है इसीलिए कट्टरता हिंदू धर्म में संभव नहीं है अंततः यह कहना समीचीन होगा कि यदि आप हिंदू कहलाने के अधिकारी तब ही हैं जब आपको सत्य को प्राप्त करने के समस्त मार्ग स्वीकार्य है अर्थात् समग्र स्वीकार करने का नाम ही हिंदू धर्म हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *इस्लाम विकीपीडिया गूगल सर्च*
1. *बाईबिल विकीपीडिया ,गूगल सर्च*
2. *लेखक ओशो, पुस्तक गीता दर्शन भाग तीन पृष्ठ 303 प्रकाशक मीडिया इन्टरनेशनल पुणे*

3. *लेखिका रेखा कुमारी, आलेख "तुलसीदास के काव्य में लोक" पत्रिका अपनी माटी*
4. *लेखक डॉक्टर नगेन्द्र, पुस्तक "हिंदी साहित्य का इतिहास" पृष्ठ 269 प्रकाशक मयूर पेपरबैक्स, नोएडा 201301*
5. *लेखक माधवाचार्य पुस्तक सर्व दर्शन संग्रह, प्रकाशक भंडारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट पुना*
6. *लेखक डॉक्टर सुरेश चन्द्र गुप्त पुस्तक भक्ति कालीन कवियों के काव्य सिद्धांत*
7. *लेखक चटर्जी एवं दत्त पुस्तक "भारतीय दर्शन" पृष्ठ 77 प्रकाशक पुस्तक भंडार पटना*
8. *लेखक ओशो पुस्तक पतंजलि योग सूत्र पृष्ठ 260 प्रकाशक फ्यूजन बुक्स नई दिल्ली*
9. *लेखक प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद पुस्तक "कला एवं साहित्य प्रवृत्ति और परंपरा" पृष्ठ 71*
10. *प्रकाशक बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना*